इकाई- 3

3

मुद्रा, बचत एवं साख

आज के युग में मुद्रा की भूमिका काफी बढ़ गई है । आज का समस्त आर्थिक ढाँचा मुद्रा पर ही निर्भर है । मुद्रा को हटा देने पर संभवतः आर्थिक व्यवस्था लड़खड़ा सकती है । वर्तमान युग में उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण इत्यादि से संबंधित क्रियाएँ मुद्रा के द्वारा ही प्रभावित होती है । इस तरह मुद्रा हमारे जीवन का एक आवश्यक अंग हो गई है । आधुनिक समाज को मुद्रा से अनेक लाभ प्राप्त है और इस कारण मुद्रा की उपयोगिता बहुत अधिक है । **मार्शल** (Marshall) ने ठीक ही कहा है कि "आधुनिक युग की प्रगति का श्रेय मुद्रा को ही है"। **ट्रेस्कॉट** (Trescott) के अनुसार, "यदि मुद्रा हमारी अर्थव्यवस्था का हृदय नहीं तो रक्त प्रवाह अवश्य है ।" (If money is not the heart of our economic system, it can certainly be considered its blood stream.) इस तरह मुद्रा हमारी अर्थव्यवस्था की जीवन-शक्ति है। आधुनिक युग में बचत एवं साख का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

मुद्रा का इतिहास

आर्थिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में मुद्रा का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । यह आधुनिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है । सच पूछा जाए तो मुद्रा के विकास का इतिहास मानव सभ्यता के विकास का इतिहास कहा जा सकता है । सभ्यता के प्रारंभिक अवस्था में जब मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित थी तब वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप के उत्पादन से कर लिया करता था । लेकिन लोगों की संख्या में वृद्धि के साथ ही उनकी आवश्यकताओं में भी वृद्धि होने लगी । अब स्वयं के उत्पादन से मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति होने में कठिनाई महसूस की जाने लगी । अब वे आपस में एक-दूसरे के द्वारा उत्पादित की हुई चीजों अथवा वस्तुओं के आदान-प्रदान से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगे । अधिकांश

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आज दूसरे व्यक्तियों पर निर्भर होना पड़ता है । आज प्रायः प्रत्येक मनुष्य किसी एक कार्य में ही अपना समय लगाता है । इससे जो आय प्राप्त होता है उससे अन्य वस्तुएँ प्राप्त कर लेता है । अतः आज विनिमय का महत्त्व काफी बढ़ गया है ।

विनिमय के स्वरूप (Forms of Exchange) - विनिमय के दो रूप हैं -

(i) वस्तु विनिमय प्रणाली तथा (Barter System) (ii) मौद्रिक विनिमय प्रणाली (Monetary System)।

(i) वस्तु विनिमय प्रणाली (Barter System)

वस्तु विनिमय प्रणाली उस प्रणाली को कहा जाता है जिसमें एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु का आदान-प्रदान होता है । दूसरे शब्दों में, ''किसी एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु के साथ बिना मुद्रा के प्रत्यक्ष रूप से लेन-देन वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाता है।'' (The act of direct exchange of one commodity for another without the mediation of money is known as Barter-system) । उदाहरण के लिए, गेहूँ से चावल बदलना, सब्जी से तेल बदलना, दूध से दही बदलना आदि । यह प्रणाली पुराने जमाने में प्रचलित थी । व्यावहारिक रूप से इस प्रणाली में लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयाँ (Difficulties of Barter System) - वस्तु विनिमय प्रणाली में मनुष्य को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था :-

1. आवश्यकता के दोहरे संयोग का अभाव (Lack of double coincidence of wants)- वस्तु विनिमय प्रणाली की यह प्रमुख कठिनाई थी । आवश्यकता के दोहरे संयोग का मतलब है कि एक की जरूरत दूसरे से मेल खा जाए लेकिन ऐसा कभी संयोग ही होता था कि किसी की जरूरत किसी से मेल खा जाए । ऐसी स्थिति में विनिमय में कठिनाई होती है। आवश्यकता के दोहरे संयोग के अभाव को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है । **लेफ्टीनेन्ट केमेरोन** (Lieutenant Cameron) अफ्रीका में एक नदी पार करना चाहता था । नाविक नदी पार करने के लिए हाथी-दाँत माँगता था जो उसके पास नहीं था । केमेरोन को पता लगा कि एक-दूसरे व्यक्ति के पास हाथी-दाँत है जो उसके बदले में कपड़ा चाहता है लेकिन

केमेरोन के पास कपड़ा भी नहीं था। कुछ समय बाद केमेरोन को पता चला कि तीसरे व्यक्ति के पास कपड़ा है और इसके बदले में वह तार (wire) चाहता है । सौभाग्य से केमेरोन के पास तार था । उसने तार देकर कपड़ा लिया, कपड़ा देकर हाथी-दाँत लिया तथा हाथी-दाँत देकर नदी पार की । इस तरह दोहरे संयोग के अभाव में उसका बहुत समय बर्बाद हुआ ।

वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयाँ

1. आवश्यकता के दोहरे संयोग का अभाव
2. मूल्य के सामान्य मापक का अभाव
3. मूल्य-संचय का अभाव
4. सह-विभाजन का अभाव
5. भविष्य के भुगतान की कठिनाई
6. मूल्य हस्तांतरण की समस्या

2. मूल्य के सामान्य मापक का अभाव (Lack of common measure of value)-वस्तु विनिमय प्रणाली की दूसरी बड़ी कठिनाई मूल्य के मापने से संबंधित थी । कोई ऐसा सर्वमान्य मापक नहीं था जिसकी सहायता से सभी प्रकार के वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य को ठीक प्रकार से मापा जा सके । उदाहरण के लिए, एक सेर चावल के बदले में कितना घी दिया जाए ? एक गाय के बदले में कितनी बकरियाँ दी जायें ? इत्यादि ।

3. मूल्य संचय का अभाव (Lack of store of value)- वस्तु विनिमय प्रणाली में लोगों के द्वारा उत्पादित वस्तुओं के संचय की असुविधा थी । व्यवहार में व्यक्ति कुछ ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करता है जो शीघ्र नष्ट हो जाती है । ऐसी शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुएँ जैसे- मछली, फल, सब्जी इत्यादि का लंबी अवधि तक संचय करना कठिन था ।

4. सह-विभाजन का अभाव (Lack of divisibility)- कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिनका विभाजन नहीं किया जा सकता है । यदि उनका विभाजन कर दिया जाए तो उनकी उपयोगिता नष्ट हो जाती है । वस्तु विनिमय प्रणाली में यह कठिनाई उस समय होती थी जब एक गाय के बदले में तीन-चार वस्तुएँ लेनी होती थी और वे वस्तुएँ अलग-अलग व्यक्तियों के पास थी । इस स्थिति में गाय के तीन-चार टुकड़े नहीं किए जा सकते क्योंकि ऐसा करने से गाय की उपयोगिता ही समाप्त हो सकती है । ऐसी स्थिति में विनिमय का कार्य नहीं हो सकता।

5. भविष्य के भुगतान की कठिनाई (Difficulty of future payment)- वस्तु विनिमय प्रणाली में उधार लेने तथा देने में कठिनाई होती थी । मान लिया जाए कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से दो वर्षों के लिए एक गाय उधार देता था और इस अवधि के बीतने पर वह गाय को लौटा देता था । लेकिन इन दो वर्षों के अंदर उधार लेनेवाला व्यक्ति गाय का दूध पिया तथा उसके गोबर को जलावन में उपयोग किया । इस तरह इस प्रणाली में उधार देने वाले को घाटा होता था जबकि उधार लेने वाला फायदे में रहता था ।

6. मूल्य हस्तांतरण की समस्या (Problem of transfer of value)- वस्तु विनिमय प्रणाली में मूल्य के हस्तांतरण में कठिनाई होती थी । कठिनाई उस समय और अधिक हो बढ़ जाती थी जब कोई व्यक्ति एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर बसना चाहता । ऐसी स्थिति में उसे अपनी सम्पत्ति छोड़कर जाना पड़ता था, क्योंकि उसे बेचना कठिन था ।

(ii) मौद्रिक विनिमय प्रणाली (Monetary System)

वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों के कारण मनुष्य के द्वारा ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता हुई जो उन्हें बाजार व्यवस्था में लाने के क्रम में इन कठिनाइयों का समाधान दे सके। इन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिए मुद्रा का आविष्कार किया गया । मुद्रा के आविष्कार से मनुष्य के व्यापारिक जीवन में सुविधापूर्वक आदान-प्रदान की स्थिति संभव हो सकी । **मुद्रा का आविष्कार मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है ।** सुप्रसिद्ध विद्वान **क्राउथर (Crowther)** ने ठीक ही कहा है कि ''जिस तरह यंत्रशास्त्र (Mechanics) में चक्र, विज्ञान में अग्नि और राजनीतिशास्त्र में मत (vote) का स्थान है, वही स्थान मानव के आर्थिक जीवन में मुद्रा का है ।'' मनुष्य के सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन का संचालन मुद्रा के माध्यम से ही होता है। मुद्रा के आविष्कार से वस्तु विनिमय प्रणाली की सारी कठिनाइयों का समाधान हो गया । इस संदर्भ में क्राउथर (Crowther) ने ठीक ही कहा है कि **''मनुष्य के सभी आविष्कारों में मुद्रा का आविष्कार एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है''** (Money is one of the most fundamental of all man's inventions)।

ABDUL SOLUTIONS ★ PATNA ★

मौद्रिक प्रणाली में विनिमय का सारा कार्य मुद्रा की सहायता से होने लगा है । इस प्रणाली में पहले कोई व्यक्ति अपनी वस्तु या सेवा को बेचकर मुद्रा प्राप्त करता है और फिर उस मुद्रा से अपनी जरूरत की अन्य वस्तुएँ प्राप्त करता है । चूँकि इस प्रणाली में मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है । इसलिए इसे मौद्रिक विनिमय प्रणाली कहा जाता है । **वास्तव में मुद्रा के विकास का इतिहास एक तरह से मानव-सभ्यता के विकास का ही इतिहास है ।** (The development of Money is, in a way, an epitome of the history of human civilization.)

विश्व की मुद्राएँ - निम्न तालिका में 3.1 विश्व के कुछ देशों की मुद्रा को दिखाया गया है-

तालिका 3.1 विश्व की मुद्राएँ

	देश	मुद्रा
1.	भारत	रुपया
2.	पाकिस्तान	रुपया
3.	बांगला देश	टका
4.	नेपाल	रुपया
5.	अमेरिका	डॉलर
6.	इंगलैंड	पॉण्ड
7.	रूस	रुबल
8.	सिंगापुर	डॉलर
9.	अफगानिस्तान	अफगानी
10.	इरान	रियाल
11.	इराक	दिनार
12.	स्वीडेन	क्रोना

मुद्रा के कार्य

आधुनिक समय में मुद्रा बहुत से कार्यों को संपन्न करती है तथा इसके कार्यों में क्रमशः वृद्धि होती जा रही है । साधारण मुद्रा के निम्न चार कार्यों को ही अत्यधिक महत्त्व दिया जाता

है । वे हैं- 1. विनिमय का माध्यम, 2. मूल्य का मापक, 3. विलंबित भुगतान का मान, 4. मूल्य का संचय । मुद्रा के इन चार कार्यों को प्राय: अँग्रेजी की एक कविता द्वारा निम्न प्रकार से व्यक्त किया जाता है –

Money is a matter of functions four.
A medium, a measure, a standard, a store.

SOLUTI ABSOL PATNA

हिन्दी में इसे निम्न तरह से कहा जा सकता है-

मुद्रा के हैं चार कार्य महान्,
माध्यम, मापन, संचय, भुगतान ।

लेकिन आजकल अर्थशास्त्रियों द्वारा मुद्रा के और भी बहुत-से कार्य बतलाये गये हैं । संक्षेप में, मुद्रा के कुछ प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं -

1. विनिमय का माध्यम (Medium of exchange)- मुद्रा विनिमय का एक माध्यम है। क्रय तथा विक्रय दोनों में ही मुद्रा मध्यस्थ का कार्य करती है । मुद्रा के आविष्कार के कारण अब आवश्यकताओं के दोहरे संयोग के अभाव की कठिनाई उत्पन्न नहीं होती । अब वस्तु या सेवा को बेचकर मुद्रा प्राप्त की जाती है तथा मुद्रा से अपनी जरूरत की अन्य वस्तुएँ खरीदी जाती है । इस तरह मुद्रा ने विनिमय के कार्य को बहुत ही आसान बना दिया है । चूँकि मुद्रा विधिग्राह्य (Legal Tender) भी होती है। इस कारण इसे स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं उत्पन्न होती है । मुद्रा के द्वारा किसी भी समय विनिमय किया जा सकता है ।

2. मूल्य का मापक (Measure of value)- मुद्रा मूल्य का मापक है । मुद्रा के द्वारा वस्तुओं का मूल्यांकन करना सरल हो गया है । वस्तु विनिमय प्रणाली में एक कठिनाई यह थी कि वस्तुओं का सही तौर पर मूल्यांकन नहीं हो पाता था । मुद्रा ने इस कठिनाई को दूर कर दिया है । किस वस्तु का कितना मूल्य होगा? मुद्रा द्वारा यह पता लगाना सरल हो गया है। चूँकि प्रत्येक वस्तु को मापने के लिए एक मापदण्ड होता है । वस्तुओं का मूल्य मापने का मापदण्ड मुद्रा ही है । मुद्रा के इस महत्त्वपूर्ण कार्य के कारण विनिमय करने की सुविधा हो गयी है क्योंकि बिना मूल्यांकन के विनिमय का कार्य उचित रूप से संपादित नहीं हो सकता है ।

3. विलंबित भुगतान का मान (Standard of deferred payment)- आधुनिक युग में बहुत से आर्थिक कार्य उधार पर होता है और उसका भुगतान बाद में किया जाता है । दूसरे शब्दों में, भुगतान विलंबित या स्थगित होता है । मुद्रा विलंबित भुगतान का एक सरल साधन है । इसके द्वारा ऋण के भुगतान करने में भी काफी सुविधा हो गई है । मान लीजिए, राम ने श्याम से एक साल के लिए 100 रुपये उधार लिया । अवधि समाप्त हो जाने पर राम श्याम को 100 रुपये मुद्रा के रूप में वापस कर दे सकता है । इस तरह मुद्रा के रूप में ऋण के भुगतान तथा विलंबित भुगतान की सुविधा हो गई । चूकि **साख अथवा उधार (credit) आधुनिक व्यवसाय की रीढ़ है** और मुद्रा ने उधार देने तथा लेने के कार्य को काफी सरल बना दिया है । इस तरह की सुविधा वस्तु विनिमय प्रणाली में नहीं थी ।

4. मूल्य का संचय (Store of value)- मनुष्य भविष्य के लिए कुछ बचाकर रखना चाहता है । वर्तमान आवश्यकताओं के साथ ही साथ भविष्य की आवश्यकताएँ भी महत्त्वपूर्ण है । इस कारण, यह जरूरी है कि भविष्य के लिए कुछ बचा करके रखा जाए । मुद्रा में यह गुण और विशेषता है कि इसे सं॰ ॰त या जमा करके रखी जा सकती । वस्तु विनिमय प्रणाली में संचय करके रखने की कठिनाई थी । वस्तुओं के सड़-गल जाने या नष्ट हो जाने का डर बना रहता था । लेकिन मुद्रा ने इस कठिनाई को दूर कर दी । मुद्रा को हम बहुत दिनों तक संचित करके रख सकते हैं । लंबी अवधि तक संचित करके रखने पर भी मुद्रा खराब नहीं होती।

5. क्रय-शक्ति का हस्तांतरण (Transfer of purchasing power)- मुद्रा का एक आवश्यक कार्य क्रय-शक्ति का हस्तांतरण भी है । आर्थिक विकास के साथ-ही-साथ विनिमय के क्षेत्र में भी विस्तार होता चला गया है । वस्तुओं का क्रय-विक्रय अब दूर-दूर तक होने लगा है । इस कारण क्रय-शक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान को हस्तांतरित करने की जरूरत महसूस की गई । चूँकि मुद्रा में सामान्य स्वीकृति का गुण विद्यमान है । अतः कोई भी व्यक्ति किसी एक स्थान पर अपनी संपत्ति बेचकर किसी अन्य स्थान पर नयी संपत्ति खरीद सकता है। इसके अलावे, मुद्रा के ही रूप में धन का लेन-देन होता है । अतः मुद्रा के माध्यम से क्रय-शक्ति को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित किया जा सकता है ।

6. साख का आधार (Basis of credit)- वर्तमान समय में मुद्रा साख के आधार पर कार्य करती है। मुद्रा के कारण ही साख पत्रों का प्रयोग बड़े पैमाने पर होता है। बिना मुद्रा के साख पत्र जैसे-चेक, ड्राफ्ट, हुण्डी आदि प्रचलन में नहीं रह सकते। उदाहरण के लिए, जमा कर्त्ता चेक (Cheque) का प्रयोग तभी कर सकता है, जब बैंक में उसके खाता (Account) में पर्याप्त मुद्रा हो। व्यापारिक बैंक भी साख का सृजन नकद कोष (Cash Reserve) के आधार पर ही कर सकते हैं। यदि नकद मुद्रा का कोष अधिक है तो अधिक साख का निर्माण हो सकता है। नकद मुद्रा के कोष में कमी होने से साख की मात्रा भी कम हो जाती है। इस तरह मुद्रा साख के आधार पर कार्य करती है।

मुद्रा है क्या ?

व्यावहारिक जीवन के हरेक क्षण में हमें मुद्रा का उपयोग करना पड़ता है। मुद्रा कहने से सामान्यतः सभी व्यक्ति समझने लगते हैं कि धातु अथवा कागज का बना वह वस्तु जो हमारे दिनचर्या में आय उपलब्ध कराता है यह वस्तु और सेवाओं के आदान-प्रदान में सुविधा उपलब्ध कराता है। मुद्रा के अर्थ को समझने के लिए हमें अपने दैनिक जीवन के उन कार्यों को देखना होगा जिसका संपादन हम देश अथवा विदेश में वस्तु और सेवाओं के क्रय-विक्रय के माध्यम के रूप में करते हैं। मुद्रा के विकास को देखने के क्रम में हमने देखा कि सभ्यता के प्रारंभिक अवस्था में वस्तु जैसे-बकरी, गाय, गेहूँ, चमड़ा आदि का उपयोग विनिमय के माध्यम के रूप में होता था। बाद में चमड़ा, पत्थर, कौड़ी, सोना एवं चाँदी तथा कागज के बने मुद्रा का उपयोग होने लगा। आजकल तो अधिकतर भुगतान पत्र-मुद्रा तथा चेक के द्वारा होता है।

साधारण बोलचाल की भाषा में मुद्रा का अर्थ धातु के बने सिक्कों से समझा जाता है। मुद्रा शब्द का प्रयोग मुहर या चिह्न के अर्थ में भी किया जाता है। यही कारण है कि जिस वस्तु पर सरकारी चिह्न या मुहर लगाया जाता था, उसे मुद्रा कहा जाता था। अर्थशास्त्र में मुद्रा की अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं। कुछ परिभाषाएँ संकुचित है तो कुछ विस्तृत हैं तथा कुछ परिभाषाएँ अन्य बातों पर आधारित है। **प्रो० हार्टले विद्स** (Hartley Withers) ने बताया है कि **"मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करती है"** (Money is what money does)।

कोलबर्न (Coulborn) का कहना है कि 'मुद्रा वह है जो मूल्य का मापक और भुगतान का साधन है'' (Money may be defined as the means of valuation of payment)। **नैप** (Knapp) के अनुसार **''कोई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित की जाती है, मुद्रा कहलाती है''** (Any thing which is declared money by the state becomes money)। **सेलिगमैन** (Seligman) का कहना है कि **''मुद्रा वह वस्तु है जिसे सामान्य स्वीकृति प्राप्त है''** (Money is one thing that possesses general acceptability) । निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि सामान्य स्वीकृति प्राप्त विधि ग्राह्य (Legal Tender) एवं स्वतंत्र रूप से प्रचलित कोई भी वस्तु जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के सामान्य मापक, ऋण के भुगतान का मापदंड तथा संचय के साधन के रूप में कार्य करती है, मुद्रा कहलाती है ।

आर्थिक विकास के वर्तमान युग में अर्थव्यवस्था में तरक्की होने के क्रम में तथा वर्तमान वैश्वीकरण (Globalisation) के युग में आदान-प्रदान की समस्त क्रिया पत्र मुद्रा (Paper Money), चेक (Cheque) आदि साख मुद्रा द्वारा हो रहा है । प्लास्टिक मुद्रा जिसे हम **एटीएम-सह डेबिट कार्ड (ATM- Cum Debit Card) तथा क्रेडिट कार्ड (Credit Card)** कहते हैं, इसके द्वारा भी आज विनिमय की क्रिया संपादित की जाने लगी है । अब **कम्प्यूटर (Computer)** के इस दौर में **कोर बैंकिंग (Core-Banking)** के प्रचलन के कारण कुछ ही क्षणों में देश या विदेश के एक से दूसरे भाग में मुद्रा का हस्तांतरण बिना किसी कठिनाई के किया जाने लगा है ।

मुद्रा के क्रमिक विकास को तालिका 3.1 के द्वारा स्पष्ट किया गया है–

तालिका 3.1 मुद्रा का विकास

1. वस्तु विनिमय (Barter)
2. वस्तु-मुद्रा (Commodity Money)
3. धात्विक मुद्रा (Mettallic Money)
4. सिक्के (Coins)
5. पत्र मुद्रा (Paper Money)
6. साख मुद्रा (Credit Money)

तालिका 3.1 से निम्न बातें सामने आती हैं-

1. वस्तु विनिमय (Barter)- इसमें वस्तु का वस्तु से लेन-देन होता है ।

2. वस्तु-मुद्रा (Commodity Money)- प्रारंभिक काल में किसी एक वस्तु को मुद्रा के कार्य संपन्न करने के लिए चुन लिया गया था । शिकारी युग (Hunting Age) में खाल या चमड़ा, पशुपालन युग (Pastoral Age) में कोई पशु जैसे-गाय या बकरी तथा कृषि युग में कोई अनाज जैसे-कपास, गेहूँ आदि को मुद्रा का कार्य संपन्न करने के लिए चुना गया तथा इन्हें मुद्रा के रूप में प्रयोग किया गया ।

3. धात्विक मुद्रा (Mettalic Money)- वस्तु मुद्रा द्वारा विनिमय करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था । अब धातुओं का प्रयोग मुद्रा के रूप में होने लगा । मुद्रा जो पीतल और ताँबा इत्यादि धातुओं से बना होता है, उसे धात्विक मुद्रा कहते हैं ।

4. सिक्के (Coins)- धातु मुद्रा के प्रयोग में भी धीरे-धीरे कुछ कठिनाइयाँ आने लगी। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए सिक्के का प्रयोग किया जाने लगा । सोने-चाँदी आदि से बना वह वस्तु जो देश की सार्वभौम सरकार की मुहर से चालित होता है उसे सिक्का कहते हैं। सिक्के को निम्न चित्र 3.1 में दिखाया गया है ।

चित्र 3.1 सिक्के

5. पत्र मुद्रा (Paper Money)- सिक्का-मुद्रा में भी कुछ दोष थे । इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने में कठिनाई होती थी । इसलिए पत्र मुद्रा का प्रचलन हुआ । वर्तमान समय

में विश्व के प्रायः सभी देशों में पत्र-मुद्रा का ही प्रचलन है । देश की सरकार तथा देश के केन्द्रीय बैंक के द्वारा जो कागज का नोट (Note) प्रचलित किया जाता है, उसे पत्र-मुद्रा कहते हैं । चूँकि यह कागज का बना होता है । इसलिए इसे कागजी मुद्रा भी कहा जाता है । **भारत में एक रुपया के कागजी नोट अथवा सभी सिक्के केन्द्र सरकार के वित्त विभाग के द्वारा चलाया जाता है** । दो रुपए या इससे अधिक के सभी कागजी नोट देश के केन्द्रीय बैंक-रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (Reserve Bank of India) के द्वारा चलाये जाते हैं । इस तरह अपने देश में केन्द्रीय सरकार एक रुपये के नोट जारी करती है तथा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया 2, 5, 10, 20, 50, 100, 500 तथा 1000 रुपये के नोट जारी करती है । भारत एवं अमेरीका में प्रचलित रुपयें के कुछ नमूने को चित्र 3.2 द्वारा दिखाया गया है।

चित्र 3.2 : भारत में प्रचलित पत्र-मुद्रा

6. साख मुद्रा (Credit Money)- आर्थिक विकास के साथ साख-मुद्रा का भी उपयोग होने लगा । आधुनिक समय में चेक, हुण्डी आदि विभिन्न प्रकार के साख-पत्र मुद्रा का कार्य करते हैं । इनको साख-मुद्रा कहा जा सकता है । अन्तर्राष्ट्रीय लेन-देन अधिकांश रूप से साख-मुद्रा द्वारा होता है । देश के आंतरिक व्यापार में भी धातु या पत्र-मुद्रा की अपेक्षा चेक

(Cheque) तथा हुण्डी आदि साख-पत्रों का अधिक उपयोग होता है ।

प्लास्टिक मुद्रा (Plastic Money)- आजकल प्लास्टिक मुद्रा का प्रचलन जोरों पर है । प्लास्टिक मुद्रा में एटीएम सह-डेबिट कार्ड तथा क्रेडिट कार्ड प्रसिद्ध है ।

(i) एटीएम सह-डेबिड कार्ड (ATM-cum-Debit Card)- आर्थिक विकास के इस दौर में बैंकिंग संस्थाओं के द्वारा प्लास्टिक के एक टुकड़े को भी मुद्रा के रूप में उपयोग किया जाने लगा है । प्लास्टिक के मुद्रा का एक रूप एटीएम है । एटीएम का अर्थ है- **स्वचालित टेलर मशीन** (Automatic Teller Machine) । यह मशीन 24 घंटे रुपये निकालने तथा जमा करने की सेवा प्रदान कराता है । भारत में सभी बड़े-बड़े व्यावसायिक बैंक जैसे- स्टेट बैंक, इलाहाबाद बैंक, आई० सी० आई० सी० आई (ICICI) बैंक आदि द्वारा यह सुविधा अपने ग्राहकों को उपलब्ध करायी जाती है । निम्न चित्र 3.3 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के एटीएम केन्द्र को दिखाया गया है ।

चित्र 3.3 : एटीएम केन्द्र

उपरोक्त चित्र में हमने ATM केन्द्र को देखा । अब ATM से रुपया निकालने के लिए ATM-Cum-Debit Card होना चाहिए । ATM-Cum-Debit Card को चित्र 3.4 में दिखाया

गया है -

चित्र 3.4 : एटीएम कार्ड

उपरोक्त चित्र 3.4 में ATM कार्ड को देखा । एटीएम कार्ड मिलने के बाद एक गुप्त पिन नं० होता है जिसकी सहायता से ATM कार्ड को एटीएम मशीन में डालने के बाद रुपया निकाला जा सकता है । एटीएम मशीन से रुपया कैसे निकाला जाता है ? इसे निम्न चित्र 3.5 में दिखाया गया है-

चित्र 3.5 : ATM मशीन

(ii) क्रेडिट कार्ड (Credit Card)– क्रेडिट कार्ड भी प्लास्टिक मुद्रा का एक रूप है। विश्व में प्रचलित क्रेडिट कार्डो में VISA, मास्टर कार्ड, अमेरिकन एक्सप्रेस आदि प्रसिद्ध है। क्रेडिट कार्ड के अन्तर्गत ग्राहक की वित्तीय स्थिति को देखते हुए बैंक उसकी साख की एक राशि निर्धारित कर देती है जिसके अन्तर्गत वह अपने क्रेडिट कार्ड के माध्यम से निर्धारित धनराशि के अन्दर वस्तुओं और सेवाओं को खरीद सकता है। चित्र 3.6 में क्रेडिट कार्ड को दिखाया गया है–

चित्र 3.6 : क्रेडिट कार्ड

मुद्रा का आर्थिक महत्त्व

आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में मुद्रा का काफी महत्त्व है। यदि मुद्रा को वर्तमान समाज से हटा दिया जाए तो हमारी सारी आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी। यदि मुद्रा न होती तो विश्व के विभिन्न देशों में इतनी आर्थिक प्रगति कभी भी संभव नहीं होती। चाहे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था हो या समाजवादी अर्थव्यवस्था हो या मिश्रित अर्थव्यवस्था हो, सभी में मुद्रा आर्थिक विकास के मार्ग में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मुद्रा के आर्थिक महत्त्व के बारे में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **ट्रेस्कॉट** (Trescott) ने कहा है कि **''यदि मुद्रा हमारी अर्थव्यवस्था का हृदय नहीं तो रक्त-स्रोत तो अवश्य है।''** आज का आर्थिक जगत मुद्रा के बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। इसलिए **प्रो० मार्शल** (Marshal) ने कहा है, कि

''मुद्रा वह धूरी है जिसके चारों तरफ संपूर्ण आर्थिक विज्ञान चक्कर काटता है'' (Money is the pivot around which the whole economic sciences clusters) । मुद्रा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए **क्राउथर** (Crowther) ने कहा है कि **''ज्ञान की प्रत्येक शाखा की अपनी-अपनी मूल खोज होती है जैसे यंत्रशास्त्र में चक्र (Wheel), विज्ञान में अग्नि (Fire), राजनीतिशास्त्र में वोट (vote) । ठीक इसी प्रकार, मनुष्य के आर्थिक एवं व्यावसायिक जीवन में मुद्रा सर्वाधिक उपयोगी आविष्कार है जिस पर संपूर्ण व्यवस्था ही आधारित है ।''** वास्तव में, मुद्रा मानव का एक महत्त्वपूर्ण आविष्कार है। अँग्रेजी की निम्न पंक्तियाँ मुद्रा के महत्त्व को स्पष्ट करती है-

"Money ! Money !! Money!!!
Brighter Than Shunshine,
Sweeter Than Honey."

इसे हिन्दी में निम्न तरह से स्पष्ट किया जा सकता है-

**''मुद्रा ! मुद्रा !! मुद्रा !!!
सूर्य-प्रकाश से भी अधिक चमकीला,
मधु से भी अधिक मीठा ।''**

अतः स्पष्ट है कि आधुनिक जीवन प्रत्येक दिशा में मुद्रा के द्वारा प्रभावित होता है । प्रो० पीगू (Pigou) का यह कहना सही लगता है कि **''आधुनिक विश्व में उद्योग मुद्रा रूपी वस्त्र धारण किए हुए हैं''** (In the modern world industry is closely enfolded in the garment of money.)।

मुद्रा से लाभ

मुद्रा हमारे लिए काफी लाभदायक है । मुद्रा से पूरे मानव समाज को लाभ पहुँचता है । अर्थशास्त्र की सभी शाखाओं जैसे-उपभोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा राजस्व में मुद्रा का महत्त्वपूर्ण स्थान है । मुद्रा के कुछ प्रमुख लाभ निम्न है-

1. मुद्रा से उपभोक्ता को लाभ- मुद्रा के आविष्कार से उपभोक्ता को बहुत लाभ हुआ

है। प्रत्येक उपभोक्ता मुद्रा से अपनी इच्छानुसार वस्तुओं को खरीद सकता है। यह सुविधा वस्तु विनिमय प्रणाली में नहीं थी।

मुद्रा उपभोक्ता की माँग का आधार है। जिस व्यक्ति के पास मुद्रा अधिक है वह वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग अधिक कर सकता है। मुद्रा का अभाव माँग की मात्रा को घटा देता है।

मुद्रा से लाभ

1. मुद्रा से उपभोक्ता को लाभ
2. मुद्रा से उत्पादक को लाभ
3. मुद्रा और साख
4. वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों का निराकरण
5. मुद्रा और पूँजी की तरलता
6. मुद्रा और पूँजी की गतिशीलता
7. मुद्रा और पूँजी निर्माण
8. मुद्रा और बड़े पैमाने के उद्योग
9. मुद्रा और आर्थिक प्रगति
10. मुद्रा और सामाजिक कल्याण

2. मुद्रा से उत्पादक को लाभ- उत्पादक को मुद्रा से अधिक लाभ हुआ है। मुद्रा की सहायता से उन्हें उत्पादन के साधनों की आवश्यक मात्रा जुटाने, कच्चे माल को खरीदने तथा संचित रखने तथा समय-समय पर पूँजी की उधार प्राप्त करने में सहायता मिलती है। उत्पादन लागत कितनी होगी, वस्तु का संभावित मूल्य क्या होगा एवं लाभ की मात्रा क्या होगी? बिना मुद्रा के ये सारी गणनाएँ असंभव है।

3. मुद्रा और साख- मुद्रा ने साख प्रणाली को संभव बनाया है। आधुनिक व्यवसाय का सारा ढाँचा, साख पर आधारित है। बैंक लोगों की छोटी-छोटी बचतों को इकट्ठा कर लेते हैं तथा उद्योगों को वह मुद्रा उधार दे देते हैं। इस तरह मुद्रा साख का आधार है।

4. वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों का निराकरण- मुद्रा के आविष्कार से वस्तु विनिमय प्रणाली की सारी कठिनाइयाँ दूर हो गयी है। अब मुद्रा के कारण विनिमय आसान हो गया है।

DIEL SOLUTIONS ARSON

5. मुद्रा और पूँजी की तरलता- मुद्रा ने पूँजी की तरलता प्रदान की है, क्योंकि इसको प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार कर लेता है। मुद्रा के रूप में पूँजी को किसी भी उपयोग में लगाया जा

सकता है । जिस व्यक्ति के पास मुद्रा है वह किसी भी समय अपनी जरूरत की चीजों को खरीद सकता है और अपनी आवश्यकता की संतुष्टि कर सकता है ।

6. मुद्रा और पूँजी की गतिशीलता- मुद्रा के आविष्कार से पूँजी की गतिशीलता में वृद्धि हुई है । अब पूँजी को न केवल एक ही देश में एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जा सकता है बल्कि एक देश से दूसरे देश में इसका स्थानांतरण संभव हो सका है । बैंकों के साख-पत्रों ने तो पूँजी की गतिशीलता में काफी वृद्धि की है । इसके चलते वाणिज्य-व्यापार का विकास संभव हो सका है ।

7. मुद्रा और पूँजी निर्माण- मुद्रा तरल संपत्ति है । इसे बैंक में जमाकर सुरक्षित रखा जा सकता है और ब्याज भी प्राप्त किया जा सकता है । किसी उद्योग धंधों में पूँजी विनियोग करके पूँजी निर्माण में अधिक वृद्धि की जा सकती है । इस तरह मुद्रा पूँजी निर्माण का एक अच्छा साधन है ।

8. मुद्रा और बड़े पैमाने के उद्योग- मुद्रा के होने से आज बड़े-बड़े उद्योग स्थापित हो सके हैं तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हो सका है ।

9. मुद्रा और आर्थिक प्रगति- मुद्रा किसी देश की आर्थिक प्रगति का सूचक है।

10. मुद्रा और सामाजिक कल्याण- मुद्रा द्वारा किसी देश की राष्ट्रीय आय तथा प्रति-व्यक्ति आय की माप होती है । यदि प्रति-व्यक्ति आय बढ़ती है तो देश आर्थिक कल्याण की ओर अग्रसर होता है । मुद्रा द्वारा सामाजिक कल्याण को मापा जा सकता है ।

मुद्रा के उपरोक्त लाभों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्थिक जीवन में मुद्रा का कितना महत्त्व है । यह मजदूर, किसान, डॉक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ तथा समाजशास्त्री से लेकर साधु तक की आवश्यकताएँ पूरा करने का सबसे उत्तम साधन है । मुद्रा ने आर्थिक जीवन में बहुत सेवा प्रदान की है । इसलिए यह कहना उचित लगता है कि **''मुद्रा एक अच्छा सेवक है''** (Money is a good servant) ।

बचत क्या है ?

समाज की कुल आय को वस्तुओं एवं सेवाओं पर खर्च किया जाता है । वस्तुओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है- (i) कुछ ऐसी वस्तुएँ होती है जिनका हम क्षणिक या तत्काल उपभोग करते हैं । इन्हें **चालू वस्तुएँ (Current Goods)** कहा जाता है । (ii) कुछ ऐसी वस्तुएँ होती हैं जो उत्पादन के कार्य में प्रयोग की जाती है । इन्हें **टिकाऊ वस्तुएँ (Durable Goods)** कहा जाता है । इस तरह समाज की कुल आय को इन्हीं दो तरह की वस्तुओं को खरीदने में खर्च किया जाता है । कुल आय का वह भाग जो चालू वस्तुओं पर खर्च किया जाता है उसे उपभोग (consumption) कहते हैं तथा कुल आय का वह भाग जो टिकाऊ वस्तुओं पर खर्च किया जाता है उसे बचत (Saving) कहते हैं । अतः स्पष्ट है कि **आय (Income) तथा उपभोग (Consumption) का अंतर बचत कहलाता है** । इसे निम्न सूत्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है –

Saving = Income - Consumption.

बचत दो प्रकार का होता है – (i) नगद बचत (Saving in Cash) तथा (ii) वस्तु-संचय (Saving in Goods). कुल आय का कुछ ऐसा भी अंश होता है जो किसी भी प्रकार की वस्तु पर व्यय नहीं किया जाता है । इसे संचय या नगद बचत कहते हैं जबकि वस्तु संचय को विनियोग (Investment) कहा जाता है । **क्राउथर (Crowther)** ने कहा है कि **"किसी व्यक्ति की बचत उसकी आय का वह भाग है जहाँ उपभोग की वस्तुओं पर व्यय नहीं की जाती है"** (A man's saving is that part of his income which is not spent on consumption goods) । अर्थशास्त्रियों का कहना है कि अर्थव्यवस्था के स्थायित्व एवं विकास के लिए बचत एवं विनियोग का एक-दूसरे के बराबर होना जरूरी है । इसे सूत्र के द्वारा निम्न तरह से व्यक्त किया जा सकता है–

S = 1 अर्थात् बचत = विनियोग

साख क्या है ?

साख का अर्थ है– विश्वास या भरोसा । जिस व्यक्ति पर जितना ही अधिक विश्वास

या भरोसा किया जाता है उसकी साख उतनी ही अधिक होती है । अर्थशास्त्र में साख का मतलब ऋण लौटाने या भुगतान करने की क्षमता में विश्वास से होता है । यदि हम कहें कि अरुण की साख बाजार में अधिक है तो इसका मतलब है कि उसकी ऋण लौटाने की शक्ति में लोगों को अधिक विश्वास है । इसी विश्वास के आधार पर एक व्यक्ति या संस्था दूसरे व्यक्ति या संस्था को उधार देता है । **प्रो0 जीड** (Gide) के अनुसार **" साख एक ऐसा विनिमय कार्य है जो एक निश्चित अवधि के बाद भुगतान करने के बाद पूरा हो जाता है"** (Credit is an exchange which is complete after the expiry of a certain period of time after payment)। **साख में दो पक्ष होते हैं –(i) ऋणदाता (Creditor) तथा (ii) ऋणी (Debtor)।** ऋणदाता ऋणी को कुछ वस्तुएँ या धन उधार देता है जिसका तत्कालीन भुगतान उसे प्राप्त नहीं होता है । यह काम विश्वास के आधार पर होता है । रुपयों की जो राशि उधार ली जाती है, उसका भुगतान कुछ समय बाद कर दिया जाता है । जो वस्तुएँ एवं सेवाएँ उधार ली जाती है उनका भी भुगतान इसी प्रकार होता है । चूँकि साख का आधार है – ऋणी पर विश्वास एवं भरोसा । अतः बिना विश्वास और भरोसे के उधार लेन-देन नहीं हो पायेगा । इस तरह यह स्पष्ट होता है कि किसी दिये हुए समय में ऋणी रुपये, सेवाएँ या वस्तुएँ साख के आधार पर प्राप्त करता है और एक निश्चित अवधि के बाद उतनी ही मुद्रा ब्याज सहित लौटाने का वादा करता है ।

साख का आधार

साख के मुख्य आधार निम्न हैं –

1. विश्वास (Confidence)– साख का मुख्य आधार विश्वास है । साख देने वाला या ऋणदाता (Creditor) उधार देने को तभी तैयार होता है जब उसे विश्वास होता है कि ऋणी (Debtor) समय पर रुपया लौटा देगा ।

2. चरित्र (Character)– ऋणी का चरित्र भी उसकी साख का एक महत्वपूर्ण आधार होता है । यदि ऋणी चरित्रवान तथा ईमानदार हैं तो उसे ऋण मिलने में दिक्कत नहीं होती। दूसरी ओर चरित्रहीन व्यक्तियों की साख कम होती हैं और उन्हें कोई ऋण देने के लिए तैयार नहीं होता ।

3. चुकाने की क्षमता (Capacity to Repay)– व्यक्ति की भुगतान करने की क्षमता या योग्यता भी उसकी साख को प्रभावित करती है । ऋणदाता किसी व्यक्ति को उधार तब देता है जब उसे उस व्यक्ति के भुगतान करने की क्षमता पर पूरा विश्वास हो । इस तरह किसी व्यक्ति की साख उस व्यक्ति के भुगतान करने की क्षमता पर निर्भर करती है ।

4. पूँजी एवं संपत्ति (Capital and Wealth)– ऋणदाता पूँजी तथा संपत्ति की जमानत के आधार पर ही ऋण देता है । अतः जिस व्यक्ति के पास जितनी ही अधिक पूँजी अथवा संपत्ति होती है, उसे उतना ही अधिक ऋण मिल सकता है ।

5. ऋण की अवधि (Period of Loan)– ऋण की अवधि का प्रभाव भी साख पर पड़ता है । ऋणदाता दीर्घकालीन ऋण देने में घबड़ाते हैं क्योंकि उन्हें संदेह रहता है कि दीर्घकाल में ऋणी की क्षमता, चरित्र और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हो जाए । इसलिए ऋणदाता अल्पकालीन ऋण देना अधिक पसंद करते हैं ।

इस तरह साख के उपरोक्त आधार हैं या आवश्यक तत्व (Essential Elements) हैं । साख के प्रमुख आधार को हम अँग्रेजी में निम्न तरह से व्यक्त करते हैं – **"A person's credit depends on four 'Cs'; confidence, character, capacity and capital."**

साख पत्र

साख पत्र से हमारा मतलब उन साधनों से है जिनका उपयोग साख मुद्रा के रूप में किया जाता है । साख पत्र के आधार पर साख या ऋण का आदान-प्रदान होता है । वे वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय-विक्रय में विनिमय के माध्यम का कार्य करते हैं । अतः साख पत्र ठीक मुद्रा की तरह कार्य करते हैं । लेकिन **मुद्रा एवं साख पत्रों में एक प्रमुख अंतर यह है कि मुद्रा कानूनी ग्राह्य (Legal Tender) होते हैं, जबकि साख पत्रों की कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं रहती है।** अतः साख पत्रों के लेन-देन के कार्य में स्वीकार करने के लिए किसी को भी बाध्य नहीं किया जा सकता ।

ऐसे साख पत्र कई प्रकार के होते हैं – 1. चेक, 2. विनिमय बिल, 3. बैंक ड्राफ्ट, 4. हुण्डी, 5. प्रतिज्ञा पत्र, 6. यात्री चेक, 7. पुस्तकीय साख तथा 8. साख प्रमाण पत्र ।

इनमें से कुछ प्रमुख साख पत्रों के बारे में जान लेना आवश्यक है ।

1. चेक (Cheque)– चेक सबसे अधिक प्रचलित साख पत्र है । चेक एक प्रकार का लिखित आदेश है जो बैंक में रुपया जमा करनेवाला अपने बैंक को देता है कि उसमें लिखित रकम उसमें लिखित व्यक्ति को दे दी जाए । चित्र 3.7 में चेक के नमूने को दिखाया गया है ।

चित्र 3.7 : चेक

2. बैंक ड्राफ्ट (Bank Draft)– बैंक ड्राफ्ट वह पत्र है जो एक बैंक अपनी किसी शाखा या अन्य किसी बैंक को आदेश देता है कि उस पत्र में लिखी हुई रकम उसमें अंकित व्यक्ति को दे दी जाए । बैंक ड्राफ्ट के द्वारा आसानी से कम खर्च में ही रुपया एक स्थान से दूसरे स्थान भेजा जा सकता है । Bank Draft देशी तथा विदेशी दोनों ही प्रकार का होता है। चित्र 3.8 में Bank Draft के नमूने को दिखाया गया है –

चित्र 3.8 : बैंक ड्राफ्ट

3. यात्री चेक (Traveller's Cheque)– यात्रियों की सुविधा के लिए यात्री चेक बैंकों द्वारा जारी किये जाते हैं । कोई भी यात्री बैंक में निश्चित रकम जमा कर देने पर यात्री चेक प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक यात्री चेक पत्र पर एक निश्चित रकम छपी रहती है। यात्री बैंक की किसी भी शाखा में यात्री चेक प्रस्तुत कर मुद्रा प्राप्त कर सकता है । इस चेक पर यात्री के हस्ताक्षर के नमूने (Specimen) भी अंकित रहते हैं जिसके चलते कोई दूसरा व्यक्ति रुपया नहीं प्राप्त कर सकता है ।

4. प्रतिज्ञा पत्र (Promissory)– यह भी एक प्रकार का साख पत्र होता है । इस पत्र में ऋणी की माँग पर या एक निश्चित अवधि के बाद उसमें अंकित रकम ब्याज सहित देने का वादा किया जाता है ।

आधुनिक समय में साख तथा साख पत्रों का महत्त्व काफी बढ़ गया है ।

SOLUTIONS ABSOL PATNA

सारांश

- मुद्रा हमारे जीवन का एक आवश्यक अंग हो गई है । आधुनिक युग की प्रगति का श्रेय मुद्रा को ही दिया जा सकता है ।
- मुद्रा के विकास का इतिहास मानव सभ्यता के विकास का इतिहास है ।
- विनिमय के दो रूप हैं – (i) वस्तु विनिमय प्रणाली तथा (ii) मौद्रिक विनिमय प्रणाली।
- वस्तु विनिमय प्रणाली में अनेक कठिनाइयाँ थी । इन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिए मुद्रा का आविष्कार किया गया । मुद्रा के आविष्कार से वस्तु विनिमय प्रणाली की सारी कठिनाइयों का समाधान हो गया ।
- मुद्रा के हैं चार कार्य महान्; माध्यम, मापन, संचय, भुगतान ।
- सामान्य स्वीकृति प्राप्त, विधि ग्राह्य (Legal Tender) एवं स्वतंत्र रूप से प्रचलित कोई भी वस्तु जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के सामान्य मापक, ऋण के भुगतान का मापदण्ड तथा संचय के साधन के रूप में कार्य करती है, मुद्रा कहलाती है ।
- भारत में एक रुपया के कागजी नोट अथवा सभी सिक्के केन्द्र सरकार के वित्त विभाग

ABSOL SOLUTIONS PATNA

द्वारा चलाया जाता है जबकि दो रुपये या इससे अधिक के सभी कागजी नोट देश के केन्द्रीय बैंक (रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया) के द्वारा चलाए जाते हैं ।

- आजकल प्लास्टिक मुद्रा का प्रचलन काफी हो रहा है । प्लास्टिक मुद्रा में एटीएम सह-डेबिट कार्ड तथा क्रेडिट कार्ड प्रसिद्ध है। इसके द्वारा विनिमय का कार्य काफी आसान हो गया है ।
- मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों तरफ संपूर्ण आर्थिक विज्ञान चक्कर काटता है ।
- "Money ! Money !! Money!!!

  Brighter Than Shunshine,

  Sweeter Than Honey."
- आय तथा उपभोग का अंतर बचत कहलाता है ।
- साख एक ऐसा विनिमय कार्य है जो एक निश्चित अवधि के बाद भुगतान करने के बाद पूरा हो जाता है ।
- साख-पत्र से हमारा मतलब उन साधनों से है जिनका उपयोग साख-मुद्रा के रूप में किया जाता है ।
- साख पत्र कई प्रकार के होते हैं - 1. चेक, 2. विनिमय बिल, 3. बैंक ड्राफ्ट, 4. हुण्डी, 5. प्रतिज्ञा पत्र, 6. यात्री चेक, 7. पुस्तकीय साख तथा 8. साख प्रमाण पत्र ।
- साख-पत्र ठीक मुद्रा की तरह कार्य करते हैं लेकिन इन दोनों में एक प्रमुख अंतर यह है कि मुद्रा कानूनी ग्राह्य (Legal Tender) होते हैं जबकि साख पत्रों की कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं रहती है ।

प्रश्नावली

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Question)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

1. आधुनिक युग की प्रगति का श्रेय .... को ही है ।
2. मुद्रा हमारी अर्थव्यवस्था की .... है ।
3. मुद्रा के विकास का इतिहास मानव-सभ्यता के विकास का .... है ।

4. एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु के आदान-प्रदान को .... प्रणाली कहा जाता है ।
5. मुद्रा का आविष्कार मनुष्य की सबसे बड़ी .... है ।
6. मुद्रा, विनिमय का .... है ।
7. प्लास्टिक मुद्रा के चलते विनिमय का कार्य .... हो गया है ।
8. मुद्रा एक अच्छा .... है ।
9. आय तथा उपभोग का अंतर .... कहलाता है ।
10. साख का मुख्य आधार .... है ।

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short- Answer Questions)

1. वस्तु-विनिमय क्या है ?
2. मौद्रिक प्रणाली क्या है ?
3. मुद्रा की परिभाषा दें ।
4. ATM क्या है ?
5. Credit Card क्या है ?
6. बचत क्या है ?
7. साख क्या है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long- Answer Questions)

1. वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों पर प्रकाश डालें ।
2. मुद्रा के कार्यों पर प्रकाश डालें ।
3. मुद्रा के आर्थिक महत्त्व पर प्रकाश डालें ।
4. मुद्रा के विकास पर प्रकाश डालें ।
5. साख-पत्र क्या है ? कुछ प्रमुख साख पत्रों पर प्रकाश डालें ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर

1. मुद्रा	2. जीवन-शक्ति	3. इतिहास	4. वस्तु-विनिमय
5. उपलब्धि	6. माध्यम	7. सरल	8. सेवक
9. बचत	10. विश्वास		

*